हफ़्तावार रिसाला : 410
Weekly Booklet : 410

Chheenk Ke Aadab (Hindi)

छींक के आदाब

(अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का बयान)

सफ़्हात : 16

- छींक और साइन्सी तह्क़ीक़ 03
- ग़ैर मुस्लिम की छींक का जवाब 08
- दांतों की बीमारियों से हिफ़ाज़त 12
- नमाज़ में छींक का जवाब देना कैसा ? 14

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दावते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

MAKTABATUL MADINA INDIA

نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ وَنُسَلِّمُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّيْن

छींक को अ़रबी में "अ़त़स" कहते हैं। येह एक फ़ित़्रती अ़मल है जो इन्सान तो इन्सान जानवर को भी पेश आता है। कई अह़ादीसे मुबारका में छींक का तज़्किरा है येही वज्ह है कि हमारी शरीअ़ते मुत़ह्हरा में छींक के मुतअ़ल्लिक़ कई अहम शरई मसाइल, आदाब और अह़काम वग़ैरा का बयान है, इन में कई ऐसे अह़काम भी हैं कि जिन पर अ़मल न करने वाला शख़्स "**गुनहगार**" हो सकता है, इस लिये इस मौज़ूअ़ के बारे में जानना ज़रूरी है। शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद इल्यास अ़त़्त़ार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने 23 जुमादल ऊला 1441 हिजरी को दा'वते इस्लामी के के चेनल पर लाइव "**छींक**" के मौज़ूअ़ पर बयान फ़रमाया।

اَلْحَمْدُ لِلّٰه ! दा'वते इस्लामी की मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़ अमीरे अहले सुन्नत के इस बयान को ज़रूरी तरमीम और मौज़ूअ़ की मुनासबत से कुछ इज़ाफ़े के साथ रिसाले की सूरत में पेश कर रहा है। इस रिसाले में आप पढ़ सकेंगे कि छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" क्यूं पढ़ना चाहिये ? छींक का जवाब क्या है ? नमाज़ में छींक आए तो क्या करें ? क्या छींक ने हमारे प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िरी दी है ? नीज़ ज़रूरी मा'लूमात के साथ साथ पढ़ने वालों की दिलचस्पी के लिये इस रिसाले में बा'ज़ वाक़िआ़त भी शामिल किये गए हैं। **अल्लाह** पाक की रिज़ा पाने और इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये ख़ुद भी इस रिसाले को पढ़िये और नेकी की दा'वत आ़म करने की निय्यत से दूसरों को भी तोह़्फ़तन पेश कीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना व बक़ीअ़ व बे ह़िसाब मग़्फ़िरत
अबू मुह़म्मद त़ाहिर अ़त़्त़ारी मदनी عُفِيَ عَنْهُ
शो'बा हफ़्तावार रिसाला मुत़ालआ़

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيِّيْنَ ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

छींक के आदाब

दुआए अत्तार : या रब्बे करीम ! जो कोई 16 सफ़हात का रिसाला "**छींक के आदाब**" पढ़ या सुन ले उसे अपनी रिज़ा पर राज़ी रहने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उस की मां बाप समेत बे हिसाब मग़्फ़िरत फ़रमा ।

اٰمين بِجاهِ خاتَمِ النَّبِيّٖن صلّى اللّٰه عليه واٰله وسلّم

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** जो मुझ पर एक दिन में एक हज़ार मरतबा दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपना मक़ाम न देख ले । (الترغيب والترهيب، 2/328، حديث:22)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

सब से पहले छींक किस को आई ?

अल्लाह पाक ने ह़ज़रते आदम सफ़िय्युल्लाह عَلَيْهِ السَّلَام को जब पैदा फ़रमाने का इरादा किया तो मलकुल मौत ह़ज़रते इज़राईल عَلَيْهِ السَّلَام को हुक्म दिया कि ज़मीन से एक मुठ्ठी मिट्टी ले आओ । हुक्मे ख़ुदावन्दी से ह़ज़रते मलकुल मौत عَلَيْهِ السَّلَام ने जब ज़मीन से मिट्टी की एक मुठ्ठी भरी तो रूए ज़मीन की ऊपरी तह छिल्के की त़रह़ उतर कर आप की मुठ्ठी में आ गई । जिस में साठ रंगों (Sixty colours) और मुख़्तलिफ़ कैफ़िय्यतों वाली मिट्टियां शामिल थीं, उस मिट्टी को मुख़्तलिफ़ पानियों से गूंधने का हुक्म फ़रमाया, फिर उस मिट्टी से ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام का जिस्म बना कर जन्नत के दरवाज़े पर रख दिया गया जिसे देख कर फ़रिश्ते तअ़ज्जुब करते थे क्यूं कि फ़रिश्तों ने ऐसी शक्लो सूरत की कोई मख़्लूक़ कभी देखी ही

नहीं थी। **अल्लाह** पाक ने फिर उस जिस्म में रूह़ को दाख़िल होने का हुक्म फ़रमाया चुनान्चे रूह़ दाख़िल हो कर जब आदम عَلَيْهِ السَّلَام के नाक शरीफ़ में पहुंची तो आप عَلَيْهِ السَّلَام को छींक आई, जब रूह़ ज़बान तक पहुंच गई तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया कि اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहो ! आप عَلَيْهِ السَّلَام ने "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहा तो **अल्लाह** पाक ने फ़रमाया : "يَرْحَمُكَ اللّٰهُ يَا اَبَا مُحَمَّد !" या'नी **अल्लाह** तुम पर रह़मत फ़रमाए, ऐ अबू मुह़म्मद (येह ह़ज़रते आदम عَلَيْهِ السَّلَام की कुन्यत थी) ! मैं ने तुम को अपनी ह़म्द या'नी ता'रीफ़ बयान करने ही के लिये बनाया है, फिर रूह़ आहिस्ता आहिस्ता पूरे बदन में पहुंच गई और आप उठ कर खड़े हो गए।

(تفسیرِ خازن، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:30، 1/43 ملخصاً وبتغیر۔ تفسیر روح البیان، پ1، البقرۃ، تحت الآیۃ:30، 1/100 ملخصاً وبتغیرٍ)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمین بِجاہِ خاتَمِ النَّبِیّٖن صلَّی اللّٰہُ علیہِ واٰلِہٖ وسلَّم

छींक और साइन्सी तह़क़ीक़

ऐ आशिक़ाने रसूल ! छींक जिस्मे इन्सानी के लिये बड़ी अहम्मिय्यत रखती है। **अल्लाह** पाक ने नाक, मुंह, ह़ल्क़ से ले कर फेफड़ों तक तमाम हवाई रास्तों में नर्म झिल्लियां (या'नी इन्सान और हैवान के गोश्त की बहुत बारीक बारीक चमड़ियां और पोस्त जिन से आरपार नज़र आता है) पैदा फ़रमाई हैं, साइन्सी तह़क़ीक़ के मुत़ाबिक़ जब हमें छींक आती है तो नाक में मौजूद बेक्टीरिया और वायरस बाहर निकलते हैं और हमारा जिस्म जरासीम से पाक हो जाता है। हमारे प्यारे प्यारे रब ने हमारे लिये कितना प्यारा निज़ाम बनाया हुवा है। سُبْحٰنَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ या'नी अ़ज़मत वाले **अल्लाह** पाक ही के लिये पाकी और ता'रीफ़ है।

हर शै से हैं अ़यां मेरे सानेअ़ की सन्अ़तें   आ़लम सब आइनों में है आईना साज़ का

(ज़ौक़े नात, स. 17)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب !   صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

“सुन्नत में ही अ़ज़मत है” के 14 हुरूफ़ की निस्बत से छींक के बारे में 14 अहादीसे मुबारका

﴾1﴿ “छींक” अल्लाह को पसन्द है

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : **अल्लाह** पाक छींक को पसन्द और जमाही को ना पसन्द करता है, तो जब तुम में से कोई छींके और **अल्लाह** की ह़म्द करे तो हर सुनने वाले मुसलमान पर ह़क़ है कि उसे छींक का जवाब दे या'नी “يَرْحَمُكَ الله” कहे। (بخاری،4/163،حدیث:6226)

छींक पर “اَلْحَمْدُ لِلّٰه” क्यूं कहा जाता है ?

शारेह़े बुख़ारी, ह़ज़रते अ़ल्लामा शरीफ़ुल ह़क़ अमजदी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : छींक सिह़्ह़त के लिये सित्तए ज़रूरिय्या में से एक है (“सित्तए ज़रूरिय्या” वोह छे ज़रूरी चीज़ें हैं जिन की इन्सान को मौत तक ज़रूरत रहती है ﴾1﴿ हवा ﴾2﴿ खाना पीना ﴾3﴿ बदनी हरकतो सुकून ﴾4﴿ नफ़्सानी ह़रकतो सुकून ﴾5﴿ सोना जागना ﴾6﴿ जिस्म के अन्दर जो कुछ है उस का मुनासिब मुद्दत तक जिस्म में रुकना और फिर जिस्म से ख़ारिज हो जाना।) छींक आने से फ़ासिद रतूबत बाहर निकल जाती है इस लिये छींकने वाले को “اَلْحَمْدُ لِلّٰه” कहने का हुक्म है। (नुज़्हतुल क़ारी, 5/597)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में जमाही का ज़िक्र हुवा, जमाही को पंजाबी में “उबासी” कहते हैं। कुछ लोग जमाही के वक़्त मुंह खोल कर अ़जीब क़िस्म की आवाज़ निकालते हैं, उन को ऐसा नहीं करना चाहिये। ह़दीसे पाक में है : जमाही लेने वाला जब “हाअ” करता है तो उस से शैत़ान हंसता है। (بخاری،4/163،حدیث:6226مفہوماً) या'नी जब कोई जमाही में मुंह फैलाता है और “हाह” कहता है तो शैत़ान ख़ूब ठठ्ठा मार कर हंसता है कि मैं ने इसे पागल बना दिया, अपना असर इस पर कर लिया। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/392)

छींक के फ़वाइद

हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : छींक से दिमाग़ साफ़ होता है, छींक आने से दिमाग़ हलका हो जाता है, त़बीअ़त खुल जाती है जिस से इबादात पर ज़ियादा कुदरत होती है। अतिब्बा (डॉक्टर्ज़) कहते हैं कि ज़ुकाम आ कर ख़ैरिय्यत से गुज़र जावे तो बहुत बीमारियों का दफ़्इय्या (या'नी इलाज) है और जमाही सुस्ती की अ़लामत है, इस से जिस्म में जुमूद त़ारी होता है, छींक रब को पसन्द है जमाही शैत़ान को पसन्द, इस लिये हज़राते अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام को जमाही कभी नहीं आती। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/391)

﴾2, 3﴿ जब तुम में से किसी को छींक आए

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : जब तुम में से कोई छींके तो कहे : "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" और इस का भाई या साथी उस से कहे يَرْحَمُكَ الله, फिर जब वोह "يَرْحَمُكَ الله" कहे तो छींकने वाला उस से कहे : يَهْدِيْكُمُ اللهُ وَيُصْلِحُ بَالَكُمْ या'नी **अल्लाह** पाक तुम्हें हिदायत दे और तुम्हारा मुआ़मला दुरुस्त फ़रमाए। (بخاری، 4/162، حدیث:6224) जब कि एक रिवायत में है कि वोह कहे : يَغْفِرُ اللهُ لَنَا وَلَكُمْ या'नी **अल्लाह** पाक हमारी और तुम्हारी बख़्शिश फ़रमाए। (ترمذی، 4/340، حدیث:2749)

मुफ़्ती अहमद यार ख़ान رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : छींक **अल्लाह** पाक की ने'मत है लिहाज़ा इस पर **अल्लाह** की ह़म्द (या'नी ता'रीफ़) करनी चाहिये। चूंकि इस ह़म्द से उस ने **अल्लाह** पाक की ने'मत की क़द्र की लिहाज़ा सुनने वाले ने उसे दुआ़ दी : "يَرْحَمُكَ الله" चूंकि इस दुआ़ देने वाले ने इस (या'नी छींकने वाले) पर एह़सान किया लिहाज़ा एह़सान का बदला एह़सान से करते हुए फिर उसे दुआ़ दे (या'नी अब छींकने वाला "يَرْحَمُكَ الله" सुन कर येह

दुआ़ दे) : يَهۡدِيۡكُمُ اللّٰهُ وَيُصۡلِحُ بَالَكُمۡ ग़रज़े कि इन ज़िक्रों के एरफेर में अ़जीब हिक्मत है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/393)

4 छींकने वाले ने अगर ह़म्द न की तो......

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के पास दो शख़्सों को छींक आई। आप ने एक को जवाब दिया, दूसरे को नहीं दिया। (जिस को जवाब नहीं दिया था) उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप ने इस को जवाब दिया और मुझे नहीं दिया। हुज़ूर صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : इस ने **अल्लाह** पाक की ह़म्द की और तू ने नहीं की।

(بخاری،4/163،حدیث:6225)

5 फ़रिश्ते की त़रफ़ से जवाब

नबिय्ये करीम صَلَّى اللّٰهُ عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो छींक पर "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه" कहता है, फ़रिश्ता कहता है : رَبِّ الۡعٰلَمِيۡن (या'नी इस कलिमे को पूरा कर देता है) और अगर छींकने वाला "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡن" कहे तो फ़रिश्ता कहता है : يَرۡحَمُكَ الله या'नी **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़्म करे।

(کتاب الدعاء للطبرانی،ص552،حدیث:1985)

छींक पर अल्लाह पाक की ह़म्द के अफ़्ज़ल अल्फ़ाज़

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحۡمَةُ اللّٰهِ عَلَيۡه फ़रमाते हैं : (छींक के वक़्त) बहुत लोग सिर्फ़ اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه कहते हैं, पूरा कलिमा कहना चाहिये : "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡن"। (मज़ीद फ़रमाते हैं :) कितनी बड़ी दौलत है कि मा'सूम फ़रिश्ते की ज़बान से दुआ़ए रह़मत (मिले)। या'नी जब छींकने वाला "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰهِ رَبِّ الۡعٰلَمِيۡن" कहेगा तो फ़रिश्ते उस को दुआ़ देंगे : "يَرۡحَمُكَ الله" **अल्लाह** पाक तुझ पर रह़मत फ़रमाए तो

इस लिये اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْن कहना चाहिये । सिर्फ़ "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहा जब भी सुन्नत अदा हो जाएगी लेकिन वोह सआ़दत जो फ़रिश्तों से दुआ़ मिलने वाली थी वोह रह गई । आ'ला ह़ज़रत رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ "अल क़ौलुल बदीअ़" के ह़वाले से फ़रमाते हैं : छींक पर अफ़्ज़लो अक्मल सीग़ा ह़म्द का येह है :

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ عَلٰی کُلِّ حَالٍ مَّا کَانَ مِنْ حَالٍ وَ صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی خَیْرِ خَلْقِہٖ مُحَمَّدٍ وَّ اٰھْلِ بَیْتِہٖ۔

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319, 320 मुलख़्ख़सन)

शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ह़ज़रत मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान رَحْمَۃُ اللّٰہِ عَلَیْہ लिखते हैं :

जो है ग़ाफ़िल तेरे ज़िक्र से ज़ुल जलाल उस की ग़फ़्लत है उस पर वबालो नकाल

क़ा'रे ग़फ़्लत से हम को ख़ुदाया निकाल हम हों ज़ाकिर तेरे और मज़्कूर तू

अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू अल्लाहू

(सामाने बख़्शिश, स. 21)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

क्या छींक का जवाब देना ज़रूरी है ?

आज कल बड़े बड़ों को "یَرْحَمُکَ اللّٰہ" कहना नहीं आता बल्कि छींक आने पर और छींक का जवाब सुन कर कुछ पढ़ना है इस का भी पता ही नहीं होता । याद रखिये ! छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहना सुन्नते मुअक्कदा है । (حاشیۃ الطحطاوی علی مراقی الفلاح،ص7)

अहम मस्अला

याद रखिये ! सुन्नते मुअक्कदा के बारे में मस्अला येह है कि अेकआध बार छोड़ा तो बुरा किया और अगर न करने की आ़दत बना ली तो गुनहगार होगा ।

एक दिरहम के बदले जन्नत ख़रीद ली (वाक़िआ)

हदीसे पाक की मश्हूर किताब "सुनने अबू दावूद शरीफ़" के मुसन्निफ़ हज़रते इमाम अबू दावूद सुलैमान बिन अश्अस सिजिस्तानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه एक बार कश्ती में तशरीफ़ लिये जा रहे थे कि दरिया के किनारे एक शख़्स को छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहते सुना, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक दिरहम पर एक (दूसरी) छोटी कश्ती किराए पर ले ली और अपनी उस कश्ती से उतर कर दूसरी कश्ती में बैठ कर वापस किनारे की तरफ़ पलटे और उस शख़्स के क़रीब जा कर छींक का जवाब "يَرْحَمُكَ الله" दे कर वापस आ गए। जब आप से इस की वज्ह पूछी गई तो फ़रमाया : छींक आने पर उस शख़्स ने हम्द कही थी और हो सकता है कि वोह शख़्स **अल्लाह** की बारगाह में मक़्बूल हो और उस की दुआ क़बूल होती हो। जब कश्ती वाले सोए तो उन्हों ने ख़्वाब में किसी कहने वाले को सुना : "ऐ कश्ती वालो ! अबू दावूद ने एक दिरहम के बदले **अल्लाह** पाक से जन्नत ख़रीद ली।" (فتح الباری، 11/514، تحت الحدیث:6225)

अल्लाह पाक की उन पर रहमत हो और उन के सदक़े हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

वोह तो निहायत सस्ता सौदा बेच रहे हैं जन्नत का
हम मुफ़्लिस क्या मोल चुकाएं अपना हाथ ही ख़ाली है

(हदाइक़े बख़्शिश, स. 186)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللهُ عَلٰی مُحَمَّد

6 ग़ैर मुस्लिम की छींक का जवाब

नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में यहूदी छींकते और उम्मीद येह रखते थे कि नबिय्ये करीम صَلَّی اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इस पर "يَرْحَمُكَ الله"

कहेंगे, लेकिन **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم "يَهْدِيْكُمُ اللّٰهُ وَ يُصْلِحُ بَالَكُمْ" फ़रमाते। (ترمذی،4/339،حدیث:2748)

﴾7﴿ छींक का जवाब न देने का नुक़्सान

मुसल्मानों के चौथे ख़लीफ़ा ह़ज़रते मौला अ़लिय्युल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा رَضِیَ اللّٰهُ عَنْه बयान करते हैं : मैं ने **अल्लाह** के प्यारे रसूल صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : तुम में से किसी ने अपने भाई की छींक का जवाब न दिया जब उस ने छींका (और اَلْحَمْدُ لِلّٰه कहा) तो क़ियामत के दिन वोह छींकने वाला इस का भी मुत़ालबा करेगा और (छींक का जवाब न देने की वज्ह से) उस से बदला लिया जाएगा। (البدور السافرۃ فی امور الآخرۃ،ص382)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

छींक के जवाब के बारे में दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का फ़तवा

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! ख़ूब तवज्जोह के साथ पढ़िये कि छींक के जवाब के मुतअ़ल्लिक़ मस्अला येह है कि एक मरतबा फ़ौरन जवाब देना वाजिब है और उस में बिला उ़ज़्रे शर्ई ताख़ीर गुनाह है।

ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम इब्ने आ़बिदीन शामी दिमश्क़ी رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه लिखते हैं : सलाम और छींक का जवाब फ़ौरन वाजिब है, इस का ज़ाहिर येह है कि जब बिला उ़ज़्र जवाब में ताख़ीर की तो मकरूहे तह़रीमी हुवा और गुनाह सिर्फ़ बा'द में जवाब दे देने से ख़त्म नहीं होगा बल्कि तौबा भी करनी होगी। (در مختار مع ردالمحتار،9/683)

लिहाज़ा एह़तियात़न तौबा कर लीजिये कि **या अल्लाह पाक !** आज तक छींक का जवाब वाजिब होने की सूरत में हम से जान बूझ कर

या भूल कर जो ताख़ीर हुई या फिर हम ने जवाब ही नहीं दिया, उस से हम तौबा करते हैं, तू हमें मुआफ़ फ़रमा दे । اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

﴾8﴿ नमाज़ में छींक

हदीसे पाक में है : नमाज़ में छींक शैतान की तरफ़ से है । (ترمذی،4/344،حدیث:2757ملتقطاً) याद रखिये ! नमाज़ में छींक आ जाए तो शैतान इस से खुश होता है कि मैं ने इस की नमाज़ में ख़लल डाल दिया वरना येह मम्नूअ़ नहीं बल्कि येह तो खुदा की ने'मत है जब कि बीमारी से न हो । (मिरआतुल मनाजीह़, 2/139 मुलख़्ख़सन बि तग़य्युरिन क़लीलिन)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾9﴿ लगातार तीन छींकें

मुसल्मानों के तीसरे ख़लीफ़ा ह़ज़रते उ़स्मान बिन अ़फ़्फ़ान رَضِیَ اللہُ عَنْہ को **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मौजूदगी में तीन छींकें आईं । **अल्लाह** पाक के आख़िरी नबी صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ऐ उ़स्मान ! क्या मैं तुम्हें खुश ख़बरी न सुनाऊं ? येह जिब्राईल हैं जिन्हों ने मुझे **अल्लाह** पाक की त़रफ़ से ख़बर दी है कि "जो मोमिन तीन छींकें लगातार लेता है तो उस के दिल में ईमान साबित (या'नी पक्का) हो जाता है ।"

(نوادر الاصول،4/471،حدیث:1066)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴾10﴿ बात करते वक़्त छींक

नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ज़ियादा सच्ची बात वोह है कि उस वक़्त छींक आ जाए । (معجم اوسط،2/302،حدیث:3360)

ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللہُ عَنْہ इर्शाद फ़रमाते हैं : गुफ़्तगू के वक़्त एक छींक मुझे एक "आ़दिल" (या'नी सच्चे) गवाह से ज़ियादा मह़बूब है । (نوادر الاصول،4/469،حدیث:1063) मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत

رَحۡمَةُ اللّٰہِ عَلَیۡه फ़रमाते हैं : जो कुछ बयान किया जाता हो जिस का सिद्क़ व किज़्ब (या'नी सच्चा और झूटा होना) मा'लूम नहीं और उस वक़्त किसी को छींक आए तो वोह इस बात के सिद्क़ (या'नी सच्चे होने) पर दलील है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319)

﴾11﴿ दुआ़ के वक़्त छींक

ह़दीसे पाक में है : दुआ़ के वक़्त छींक आ जाना सच्चा गवाह है। (کنز العمال، ج:9، 5/68، حدیث:25520) आ'ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत رَحۡمَةُ اللّٰہِ عَلَیۡه फ़रमाते हैं : दुआ़ के वक़्त छींक होना दलीले क़बूल है (या'नी दुआ़ के क़बूल होने की दलील है)। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 319)

﴾12﴿ मग़्फ़िरत की ख़ुश ख़बरी

सह़ाबिये रसूल ह़ज़रते अबू राफ़ेअ़ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡه फ़रमाते हैं : **अल्लाह** पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद जाने के इरादे से अपने मुबारक घर से बाहर तशरीफ़ लाए तो मैं भी उन के साथ था, ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ पकड़ा हुवा था, जब हम बक़ीअ़ शरीफ़ पहुंचे तो **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को छींक आई, आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरा हाथ छोड़ दिया, फिर ऐसे खड़े हो गए जैसे कोई मुतह़य्यर (या'नी ह़ैरान आदमी) खड़ा हो, मैं ने अ़र्ज़ किया : **या नबिय्यल्लाह !** मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! आप ने कुछ कहा है जिसे मैं समझा नहीं ? तो ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जिब्रईले अमीन عَلَیۡهِ السَّلَام मेरे पास आए और कहा : जब आप को छींक आए तो कहिये اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ کَکَرَمِهٖ وَالۡحَمۡدُ لِلّٰہِ کَعِزِّ جَلَالِهٖ (या'नी तमाम ख़ूबियां **अल्लाह** के लिये हैं जैसा उस का फ़ज़्लो करम है और तमाम तारीफ़ें **अल्लाह** पाक के लिये हैं जैसा उस की इ़ज़्ज़तो बुज़ुर्गी है।) तो बेशक **अल्लाह** पाक तीन मरतबा फ़रमाता है : मेरे बन्दे ने सच कहा, मेरे बन्दे ने सच कहा, मेरे बन्दे ने सच कहा, इसे बख़्श दिया गया। (عمل الیوم واللیلۃ، ص116، حدیث:261)

यक़ीनन येह अ़मल ता'लीमे उम्मत के लिये है वगर्ना तो प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की शान येह है कि आप صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के सदक़े से हम गुनहगारों को बख़्शा जाएगा। اِنۡ شَآءَاللّٰہ

صَلُّوۡا عَلَی الۡحَبِیۡب ! صَلَّی اللّٰہُ عَلٰی مُحَمَّد

﴿13﴾ दांत, कान और पेट के दर्द से ह़िफ़ाज़त का नुस्ख़ा

जब किसी को छींक आई और वोह "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ" कहे इस से पहले सुनने वाले ने "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہ" कह लिया तो ह़दीस में आया है कि ऐसा शख़्स दाढ़, कान और बद ह़ज़्मी के सबब होने वाले पेट के दर्द से मह़फ़ूज़ रहेगा।

(المقاصد الحسنۃ، ص420، حدیث:1130)

दांतों की बीमारियों से ह़िफ़ाज़त

ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान رَحۡمَۃُ اللّٰہِ عَلَیۡہ फ़रमाते हैं : जो कोई छींक पर कहे : "اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ عَلٰی کُلِّ حَال" और अपनी ज़बान सारे दांतों पर फेर लिया करे तो اِنۡ شَآءَاللّٰہ दांतों की बीमारियों से मह़फ़ूज़ रहेगा, मुजर्रब (या'नी तजरिबा शुदा बात) है। (मिरआतुल मनाजीह़, 6/396)

﴿14﴾ छींक के वक़्त चेह्‌रए अन्वर ढांप लेते

रसूलुल्लाह صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमते सरापा अ़ज़्मत में जब छींक की ह़ाज़िरी होती या'नी जब आप छींकते तो अपने मुबारक हाथ से या कपड़े से चेह्‌रए अन्वर ढांप लेते और इस ढांपने के ज़रीए़ अपनी आवाज़ मुबारक को कम करते। (ترمذی، 4/343، حدیث:2754)

छींक में आवाज़ बुलन्द मत कीजिये

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! छींक अच्छी चीज़ है और येह सारा बयान इत्तिफ़ाक़ी छींक की निस्बत से है। ज़ुकाम (नज़्ला) की छींकें कोई चीज़ नहीं मगर आवाज़ पस्त (या'नी कम) करना इन में भी तहज़ीब है और मस्जिद में छींक आने की सूरत में आवाज़ कम करने की ज़ियादा ताकीद

है। (मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 322) बा'ज़ लोग बहुत ज़ोर से इस अन्दाज़ में "आक छी" करते हैं कि सीधी त़रफ़ वाला भी उछल पड़े और उलटी त़रफ़ वाला भी कि येह क्या हो गया ? याद रखिये ! छींक में आवाज़ बुलन्द करना ह़माक़त है या'नी बे वुक़ूफ़ी है। (ردالمحتار، 9/685) लिहाज़ा छींक में इस त़रह़ जान बूझ कर आवाज़ बुलन्द करना येह अच्छे और मुहज़्ज़ब आदमी की अ़लामत नहीं।

छींक से बदफ़ाली लेना कैसा ?

ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحْمَةُاللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : बहुत लोग छींक को बदफ़ाली ख़याल करते (या'नी इस से बद शुगूनी लेते) हैं, मसलन किसी काम के लिये जा रहा है और किसी को छींक आ गई तो समझते हैं कि अब वोह काम अन्जाम नहीं पाएगा, येह जहालत है कि बदफ़ाली कोई चीज़ नहीं और ऐसी चीज़ को बदफ़ाली कहना जिस को ह़दीस में "शाहिदे अ़द्ल" फ़रमाया, सख़्त ग़लती है।

(बहारे शरीअ़त, 3/478, ह़िस्सा : 16)

बद शुगूनी का असर नहीं होता कभी *जो तक़्दीर में होता है, वोही मिलता है हमें*

صَلُّوْاعَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

"छींक का जवाब दें" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से छींक के 14 अह़काम

﴾1﴿ छींक का जवाब एक मरतबा वाजिब है जब कि छींकने वाला "اَلْحَمْدُلِلّٰه" भी कहे, अगर मजलिस में दोबारा उसी फ़र्द को छींक आई और उस ने "اَلْحَمْدُلِلّٰه" कहा तो दोबारा जवाब वाजिब नहीं बल्कि मुस्तह़ब है। (فتاوٰی ہندیہ، 5/326, बहारे शरीअ़त, 3/476, ह़िस्सा : 16) ﴾2﴿ छींकने वाले को चाहिये कि ज़ोर से ह़म्द कहे ताकि कोई सुने और जवाब दे। ﴾3﴿ अगर

कोई शख़्स बहुत सारे लोगों की मौजूदगी में छींका और "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहा तो सुनने वालों में से एक ने भी जवाबन "یَرْحَمُكَ الله" कह दिया तो सब सुनने वालों की त़रफ़ से वाजिब अदा हो जाएगा, अब सब को जवाब देना वाजिब नहीं। अलबत्ता बेहतर येह है कि सब ह़ाज़िरीन जवाब दें। (رد المحتار، 9/684)

﴾4﴿ ख़ुत़्बे के वक़्त किसी को छींक आई तो सुनने वाला उस का जवाब न दे। (فتاوی قاضی خان، 2/377) ﴾5﴿ छींक आने से नमाज़ नहीं टूटती।

नमाज़ में छींक का जवाब देना कैसा ?

﴾6﴿ किसी को छींक आई उस के जवाब में नमाज़ी ने "یَرْحَمُكَ الله" कहा तो उस की नमाज़ टूट गई और ख़ुद उसी को छींक आई और अपने आप को मुख़ात़ब कर के "یَرْحَمُكَ الله" कहा तो नमाज़ न टूटी, किसी और नमाज़ पढ़ने वाले को छींक आई उस ने "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहा नमाज़ न गई और जवाब की निय्यत से कहा तो जाती रही। नमाज़ में छींक आई किसी दूसरे ने "یَرْحَمُكَ الله" कहा और इस (या'नी नमाज़ पढ़ने वाले) ने जवाब में कहा "आमीन" नमाज़ टूट गई। नमाज़ में छींक आए तो चुप रहे और "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कह लिया तो भी नमाज़ में ह़रज नहीं (क्यूं कि छींक आने पर ह़म्द कहना उ़र्फ़न जवाब नहीं लिहाज़ा मुफ़्सिदे नमाज़ या'नी नमाज़ तोड़ने वाला अ़मल होने का सबब नहीं पाया गया।) और अगर उस वक़्त ह़म्द न की तो नमाज़ से फ़ारिग़ हो कर कहे। (बहारे शरीअ़त, 1/605, ह़िस्सा : 3 बि तस्हीलिन)

﴾7﴿ (नमाज़ की ह़ालत में) छींक, खांसी, जमाही, डकार में जितने ह़ुरूफ़ मजबूरन निकलते हैं, मुआ़फ़ हैं। (बहारे शरीअ़त, 1/608, ह़िस्सा : 3) ﴾8﴿ अगर छींकने वाले शख़्स ने छींक आने के बा'द "اَلْحَمْدُ لِلّٰه" कहा और दूसरे कमरे में मौजूद शख़्स ने सुना, तो सुनने वाले पर वाजिब है कि जवाब दे, अगर जवाब नहीं देगा तो गुनाहगार होगा। ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती

अमजद अ़ली आ'ज़मी رَحۡمَۃُاللّٰہِ عَلَیۡہِ फ़रमाते हैं : दीवार के पीछे किसी को छींक आई और उस ने "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" कहा तो सुनने वाला उस का जवाब दे।

(ردالمحتار، 9/684) (बहारे शरीअ़त, 3/477, हिस्सा : 16)

﴾9﴿ ग़ैर मुस्लिम छींक आने पर "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" कहे तो जवाब में "یَھۡدِیۡكَ اللّٰہ" (या'नी **अल्लाह** पाक तुझे हिदायत दे) या "یَھۡدِیۡکُمُ اللّٰہُ وَیُصۡلِحُ بَالَکُمۡ" (**अल्लाह** पाक तुझे हिदायत दे और तेरे मुआ़मले की इस्लाह़ फ़रमाए।) कहा जाए।

(ترمذی، 4/339، حدیث:2748 ماخوذاً۔ ردالمحتار، 9/684)

﴾10﴿ बैतुल ख़ला (Washroom) में छींक आए तो ज़बान को ह़रकत दिये बग़ैर दिल में "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" कह ली जाए। जैसा कि बहारे शरीअ़त में है : छींक या सलाम या अज़ान का जवाब ज़बान से न दे और अगर छींके तो ज़बान से "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" न कहे, दिल में कह ले। (बहारे शरीअ़त, 1/409, हिस्सा : 2)

﴾11﴿ तिलावत करने वाले, दीनी मुत़ालआ़ करने वाले, दुआ़ या ज़िक्र वज़ाइफ़ वग़ैरा में मसरूफ़ शख़्स पर छींकने वाले की ह़म्द का जवाब वाजिब नहीं है लिहाज़ा उसे इख़्तियार है कि जवाब दे या न दे। येह इसी त़रह़ है कि कोई शख़्स इन कामों में से किसी में मसरूफ़ हो और इस दौरान कोई उसे सलाम करे तो उस पर जवाब वाजिब नहीं होता। (दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का फ़तवा, नम्बर : WAT2311) ﴾12﴿ छींकने से आंसू निकल आएं तो वुज़ू नहीं टूटता। ﴾13﴿ छींकने वाले की छींक का जवाब उस वक़्त है जब कि वोह छींकने के बा'द "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" कहे और अगर उस ने अभी छींक मारी ही नहीं या छींक मारी लेकिन अभी "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" नहीं कहा तो जवाब वाजिब नहीं नीज़ उस के "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" कहने के बा'द सुनने वाले पर जवाब वाजिब है अगर "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" कहने से पहले "یَرۡحَمُكَ اللّٰہ" कह लिया तो जवाब न हुवा बल्कि "اَلۡحَمۡدُلِلّٰہ" सुनने के बा'द अब जवाब वाजिब होगा। ﴾14﴿ छींक का जवाब देना उस वक़्त वाजिब होता है कि जब छींक

के साथ साथ छींकने वाले से ह़म्द (اَلْحَمْدُ لِلّٰہ) भी सुनी जाए, लिहाज़ा छींकने वाले ने हलकी आवाज़ में "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहा और ह़ाज़िरीन ने नहीं सुना तो जवाब देना वाजिब नहीं, अलबत्ता उ़लमाए किराम फ़रमाते हैं कि जब येह मा'लूम न हो कि छींकने वाले ने ह़म्द की है या नहीं की तो फिर यूं मशरूत़ जवाब दे देना चाहिये कि अगर तू ने ह़म्द की है तो "يَرْحَمُكَ الله" ।

(दारुल इफ़्ता अहले सुन्नत का फ़तवा)

बहारे शरीअ़त में है : छींक का जवाब देना वाजिब है, जब कि छींकने वाला "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहे और इस का जवाब भी फ़ौरन देना और इस त़रह़ देना कि वोह सुन ले, वाजिब है। या'नी दिल ही दिल में जवाब दे दिया और उस (छींकने वाले) ने सुना नहीं तो वाजिब अदा नहीं होगा।

(बहारे शरीअ़त, 3/476, हि़स्सा : 16 बि तस्हीलिन)

येह ज़ेहन में रहे कि जब मह़रमा औ़रत छींक आने पर "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहे तो उसे जवाब में "يَرْحَمُكِ الله" कहेंगे, मसलन घर में अम्मी को छींक आई, उन्हों ने "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहा और बेटे ने सुना तो बेटा जवाब में कहेगा "يَرْحَمُكِ الله" काफ़ के नीचे ज़ेर दे कर और अगर मर्द को छींक आई और उस ने "اَلْحَمْدُ لِلّٰہ" कहा तो सुनने पर जवाबन "يَرْحَمُكَ الله" कहेंगे, काफ़ पर ज़बर पढ़ेंगे।

ना मह़रमा को अगर छींक आए तो ?

बहारे शरीअ़त, जिल्द 3, सफ़ह़ा 477 पर है : (ग़ैर मह़रमा) औ़रत को अगर छींक आई अगर वोह बूढ़ी है तो मर्द उस का जवाब दे, अगर जवान है तो इस त़रह़ जवाब दे कि वोह न सुने, मर्द को छींक आई और औ़रत ने जवाब दिया अगर जवान है तो मर्द उस का जवाब अपने दिल में दे और बूढ़ी है तो ज़ोर से जवाब दे सकता है।

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب!　　صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

अगले हफ़्ते का रिसाला

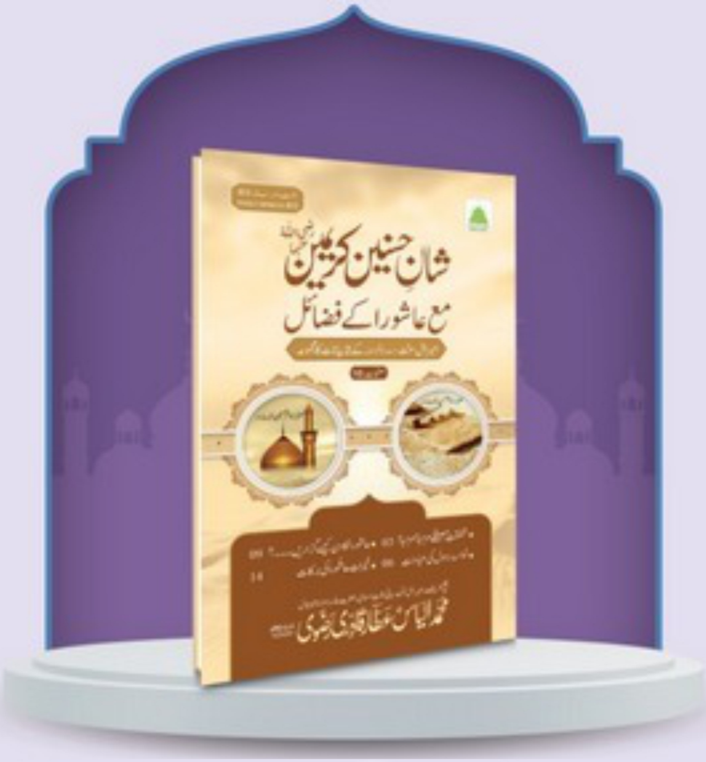

DAWATEISLAMI INDIA

FGN Channel
Dekhte Rahiye

MAKTABATUL MADINA INDIA

Delhi : 421, Urdu Market, Matia Mahal, Jama Masjid, Delhi-110006 +91-8178862570

Mumbai : 19/20, Mohammad Ali Road, Opp. Mandavi Post Office, Mumbai-400003 +91-9320558372

Ahmedabad : Faizane Madina, Tinkonia Bagicha, Mirzapur, Ahmedabad-380001 +91-9327168200

Nagpur : Opp. Garib Nawaz Masjid, Saifi Nagar Road, Mominpura, Nagpur-440018 +91-9326310099

www.maktabatulmadina.in feedbackmmhind@gmail.com

For Home Delivery of Books Please Contact on (T&C Apply) +91-9978626025